वेद एवं वेदांग भारतीय ज्ञान- विज्ञान के मूल स्रोत : प्रो कपिल कपूर

बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय में हिंदी संगम फाउंडेशन, न्यू जर्सी

अमेरिका के संयुक्त तत्वावधान में आइक्यूएसी सेल की देखरेख में “भारतीय ज्ञान परंपरा : विविध आयाम" विषय पर एक दिवसीय इंटरनेशनल सेमिनार का आयोजन किया गया।

इस सेमिनार के उद्घाटन सत्र में बतौर बीज वक्ता जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली के पूर्व कुलपति प्रो. कपिल कपूर ने भारतीय ज्ञान परंपरा के संबंध में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि भारत प्राचीन काल से ही ज्ञान का भंडार रहा है। इसके मूल स्रोत हमारे वेद वेदांग पुराण आदि हैं।भारतवर्ष की पावन भूमि अनेक ऐसे मनीषियों से सुशोभित रही है जिन्होंने अपने ज्ञान और विज्ञान के माध्यम से विदेश में भी विशेष पहचान बनाई है। भारतीय ज्ञान परंपरा में परम सिद्ध योगी गोरखनाथ और बाबा मस्तनाथ जी का भी विशेष योगदान रहा है। भारतीय ज्ञान परंपरा पानी में बैठे हुए रेत के समान शाश्वत है। इसका उदाहरण हमारे प्राचीन वेद हैं जिनका ज्ञान अनेक माध्यमों से प्रसारित और प्रचारित होकर भारत के ही नहीं अपितु विश्व के कोने- कोने में पहुंचा हुआ है।

कार्यक्रम में बतौर मुख्य वक्ता चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय, भिवानी के कुलपति प्रो.आर. के. मित्तल ने अपने संबोधन में भारत के सभी मुख्य धर्मों की ज्ञान परंपरा पर विशुद्ध रूप से प्रकाश डालते हुए कहा कि हमारी शिक्षा और संस्कृति केवल देश में ही नहीं बल्कि विदेश में भी सम्माननीय और अनुकरणीय है। अगर वर्तमान शिक्षा प्रणाली को भारतीय ज्ञान परंपरा से जोड़ दिया जाए तो निश्चित रूप से काफी सकारात्मक परिणाम सामने आएंगे।

बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय की प्रो चांसलर डॉ. अंजना राव ने अपने संबोधन में कहा कि भारत सदियों से ज्ञान-विज्ञान और चिकित्सा के क्षेत्र में विश्व गुरु रहा है क्योंकि भारतीय ज्ञान परंपरा ऋषि मुनियों और संतों के अनुभवों की देन है। शिक्षा और संस्कृति के बारे में गहराई से जानना है तो हमें वैदिक ग्रंथों का अध्ययन करना होगा क्योंकि वर्तमान समय में जो विकास हम देख रहे हैं यह सब भारत की ही ज्ञान परंपरा की देन है।

इसी संबंध में बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर आरएस यादव ने अपने संबोधन में कहा की शिक्षा , अध्यात्म , विज्ञान और चिकित्सा के क्षेत्र में भारत का ज्ञान सराहनीय है। पूर्व काल में विदेशी आक्रांताओं ने हमारे ज्ञान को छिन्न -भिन्न करने का प्रयास तो किया लेकिन मनुष्यों के पास मौखिक रूप से सुरक्षित होने के कारण पूर्णतया नष्ट नहीं कर पाए। आज इस ज्ञान परंपरा का परिणाम यह है कि हमारा देश शिक्षा, तकनीकी ,चिकित्सा इत्यादि प्रत्येक क्षेत्र में दिन प्रतिदिन

नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है।

न्यू जर्सी, अमेरिका से हिंदी फाउंडेशन के अध्यक्ष अशोक ओझा ने भी भारतीय ज्ञान परंपरा के विषय में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति अत्यंत प्राचीन है वर्तमान समय में विदेश में भी हमारे ज्ञान विज्ञान की देन को विदेश में सराहा जा रहा है।

सिंगापुर की साहित्यकार डॉ.सावित्री वशिष्ठ ने अपने वक्तव्य में कहा कि भारत का ज्ञान अनेक माध्यमों से जन-जन तक पहुंच रहा है। शिक्षा, कला ,संगीत इसके मुख्य स्रोत हैं।

www.bmu.ac.in
ONE DAY INTERNA
AN KNOWLE
Quality
di Sang
श्री अशोक ओझा
डॉ. अंजना राव

L MULTIDISCIPLINARY SEMINAR
on
STEM : VARIOU
SIONS
ptember, 2023
URAL SES
rganized by
ce Cell, B.M
ndation, N
श्री अशोक ओझा
Bisleri

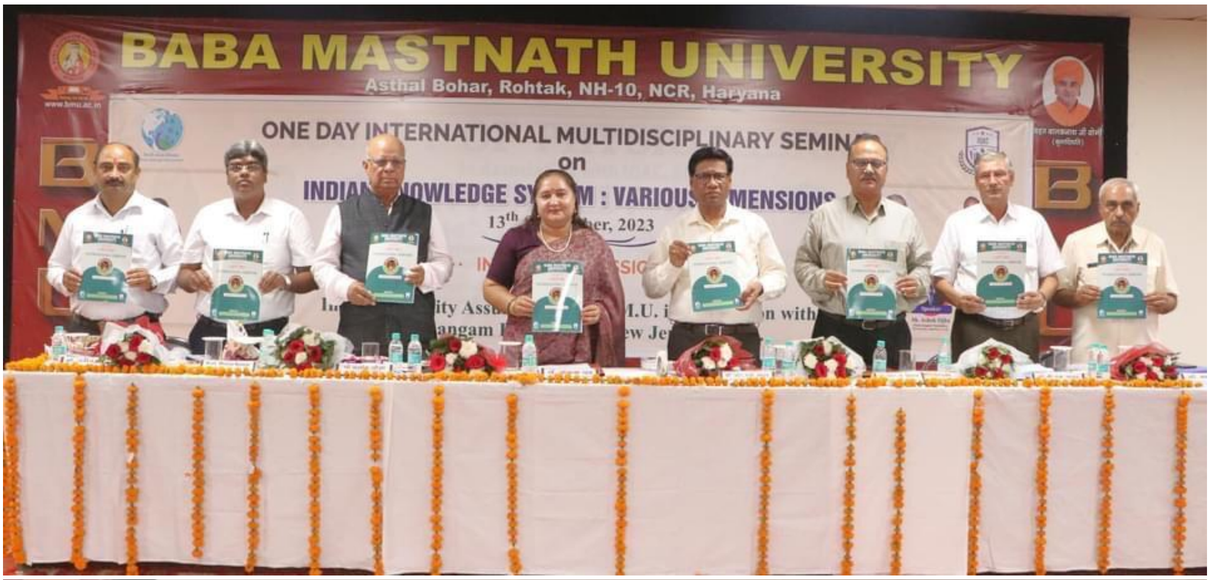
BABA MASTNATH UNIVERSITY
Asthal Bohar, Rohtak, NH-10, NCR, Haryana
www.bmu.ac.in
on

(कुलाधिपति)

ONE DAY INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY SEMINAR
on
INDIAN KNOWLEDGE SYSTEM : VARIOUS DIMENSIONS
Baba Mastnath University, Asthal Bohar, Rohtak
डॉ. अंजना राव
प्रो. आर. एस. यादव

BABA MASTNATH UNIVERSITY
Asthal Bohar, Rohtak, NH-10, NCR, Haryana
www.bmu.ac.in
ONE DAY INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY SEMINAR
on

kapil kapoor
IT Head
Aman Saroha
11:14 AM | fzq-gbyc-pmx